आपने लिखा

संदर्भ के अंक 50 में प्रकाशित लेख 'मेरी उलझन' पढ़कर क्या प्रतिक्रिया देनी चाहिए कुछ समझ नहीं पाया। लेकिन मुझे इस बात का विश्वास था कि मेरे कुछ मित्र ज़रूर मदद कर सकते हैं। 'बालमूर्ति' गुजराती पत्रिका में श्री ललित भाई का लेख पढ़कर मैंने उनसे सुझाव मंगवाने का विचार किया। उनके साथ 'बालमूर्ति' के संपादक जयंत भाई शुक्ल और अहमदाबाद श्रेयस फाउंडेशन की संचालिका लीना बेन मंगलदास के पास भी उलझन की फोटोकॉपी भेजकर उनसे प्रतिक्रियाएं मंगवाईं।

ललित भाई का विचार है कि माधव केलकर की चिंता उचित है। तत्काल कुछ कहा नहीं वह भी अच्छा किया। बच्चे की यह सोच सहज है। इस घटना से आप आवेश में आए बिना स्वस्थ रहें यह आवश्यक है। इस घटना का दुख न रखते हुए इसे भूलना भी नहीं चाहिए। बच्चे की गलती स्वीकार करने की क्षमता का इंतज़ार करना चाहिए। बच्चे के दिल को चोट न लगे, वह शर्मिंदगी महसूस न करे फिर भी गलत किया है ऐसी समझ विकसित हो यह अनिवार्य है।

इस बारे में आगे कैसे बढ़ा जाए यह इस बात पर भी निर्भर है कि बच्चे के माता-पिता उसे कितना चाहते हैं और उसके संपूर्ण विकास में उनकी कितनी रुचि है। बच्चे की अनुपस्थिति में इस घटना के बारे में आपस में विचार-विमर्श करें। उचित मौका मिलने पर बच्चे से इसके बारे में बातचीत करना चाहिए ताकि ऐसी गलती फिर कभी न होने पाए, उस की फिक्र बच्चा स्वयं करना सीखे। परन्तु ख्याल रखना होगा कि इस चर्चा में ऐसा नहीं लगना चाहिए कि बालक ने कोई बहुत ही गंभीर व बड़ी गलती कर दी है जिससे उसे अत्यंत शर्मिंदा होना है। यह सब इस प्रसंग का उल्लेख किए बिना भी किया जा सकता है। बच्चे से यह चर्चा की जा सकती है कि ऐसी बहुत-सी चीज़ों के बारे में बहुत सारे लोगों को मोह होता है, परन्तु ऐसा मोह निरर्थक है और उसके भुलावे में आकर आचरण करना उचित नहीं है। अन्य लोगों के दृष्टांत लेकर भी यह समझाया जा सकता है। इस सबके आधार पर बालक खुद ही समझ जाए तो अच्छा होगा और स्वाभाविक भी।

वडोदरा में किरीटभाई हर रविवार को गोष्ठी आयोजित करते हैं। वहां सबकी उपस्थिति में इस बारे में पूछने पर सामूहिक प्रत्युत्तर मिला कि - बालक पर हिंसक स्वरूप का मानसिक उद्वेग न होने पाए फिर भी सत्य का दर्शन हो पाए, इस तरह सोच में परिवर्तन लाने हेतु समय आने पर सावधानी से बालक के साथ बातचीत करनी चाहिए।

नूतन बाल-शिक्षण संघ के जयंत दादा शुक्ल के अनुसार:

- बालक की उम्र को देखते हुए जान बूझकर धोखा देने का उसका इरादा है ऐसा नहीं लगता।
- बालक को नैतिकता का पाठ पढ़ाना चाहिए आपका यह विचार सही है परन्तु इस संदर्भ में चर्चा व प्रस्तुतिकरण बच्चे के मानस को समझकर ही करना चाहिए।
- बच्चे की उम्र सात साल की है, इसलिए उससे इस विषय में बातचीत की जा सकती है।

- बालक अच्छे मूड में हो तब शांति से बैठाकर खुलकर बात की जा सकती है कि उसने जो किया उसका पता लगा है। मैं इस संदर्भ में उसे मात्र इतना बताना चाहूंगा कि नम्बर लाना, नाम छपवाना या किसी के आगे अपना बड़प्पन जमाना, यह महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि आपने स्वयं कुछ किया हो वह कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण है।
- या शांति से बैठाकर विभिन्न कहानियों के ज़रिए नैतिकता का बोध दिया जा सकता है, जिस में बालक बोध स्वयं समझे इस तरह कहानी सुनानी चाहिए।

इन्होंने साथ में आपके लिए कुछ किताबें, गिजुभाई ने कहा, प्राथमिक शाला में भाषा-शिक्षण और दिवास्वप्न, भी पढ़ने के लिए भेजी हैं। इन सभी प्रतिक्रियाओं और किताबों को मैं संदर्भ के लिए भेज रहा हूं। आशा है उपयोगी रहेंगी।

वसंत वडवले
वडोदरा, गुजरात

शैक्षणिक संदर्भ के पिछले अंक में मेरी उलझन पढ़ी। मेरा विचार है कि बच्चे को सच बता देना चाहिए। अभी वह अपनी उपलब्धि पर भले ही खुश है क्योंकि उसे यह अहसास नहीं है कि उसकी खुशी का आधार थोथा है और बेशक गलत भी। यदि अभी आपने उसे सच नहीं बताया तो वह आगे भी इसी तरह खुशी हासिल करता रहेगा।

चूंकि अभी वह सीखने की प्रक्रिया में है इसलिए कुछ बुरा लगने के बावजूद वह इस प्रवृत्ति को दोहराएगा नहीं। लेकिन अभी उसकी खुशी व उत्साह का विचार करके उसे नहीं रोका गया तो आगे यह काम तो मुश्किल हो ही जाएगा, बच्चा अपनी मौलिकता खोकर नकल का आदी भी बन जाएगा। इसलिए मेरे विचार से तो उसे मित्रवत् समझाते हुए बता दें कि वह जो कुछ खुद रचेगा वही अच्छा होगा।

गिरिजा कुलश्रेष्ठ
कोटवाला मोहल्ला, ग्वालियर, म.प्र.

संदर्भ का नया अंक काफी अंतराल के बाद मिला। नाम में थोड़ा परिवर्तन हुआ है परन्तु सामग्री का स्तर बरकरार है इसलिए प्रसन्नता हुई। नील्स बोहर का संस्मरण सचमुच आनंद दे गया। एलेक्स एम. जॉर्ज के शोध ने काफी प्रभावित किया। बच्चों के मन में जो छवि किसी भी चीज़ के बारे में बचपन में ही निर्मित करवा दी जाती है उसको बदल पाना बहुत कठिन होता है चाहे वह छवि गलत ही क्यों न हो। मुझे याद आ रहा है कि सरकार के काम-काज के बारे में बचपन में हम काफी भ्रम में रहते थे और लोकतंत्र की जगह एक व्यक्ति-केन्द्रित व्यवस्था का चित्र दिमाग में बनता था जिसमें राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री ही सरकार होते थे और पुलिस, फौज आदि डराने वाली चीज़। इस सब के चलते नागरिक शास्त्र इस कारण हमेशा कठिन विषय लगता रहा।

जे. श्रीदेवी के पत्र ने सोचने के लिए विवश किया और पग-पग पर हतोत्साहित करने वाले शिक्षकों पर तरस आया।

बहुत सोचने के बाद भी केलकर जी की समस्या का कोई समाधान नहीं सूझा, उल्टे एक घटना याद आ गई। कुछ समय पहले अपनी कॉलेज पत्रिका के लिए हमें रचनाएं इकट्ठा करने का काम मिला था। उस समय हमें कई ऐसी रचनाएं मिलीं जो

इधर-उधर से टीप-टाप कर अपने नाम से लिखकर दी गईं थीं। पता चलने पर हम उन्हें वापस भी इसलिए नहीं कर सके क्योंकि हम उन छात्रों को हतोत्साहित नहीं करना चाहते थे। लेकिन इस प्रवृत्ति का कोई हल नहीं सूझा, इतना ज़रूर है कि यह प्रवृत्ति बड़ों से ही बच्चों में गई है।

संपादक मंडल की अपील कि वे नए रचनाकारों, चित्रकारों का स्वागत करते हैं, काफी अच्छी लगी। इस बहाने पत्रिका को नई प्रतिभाओं का सहयोग मिलेगा और पत्रिका का नए इलाकों में फैलाव भी होगा।

पिछले दिनों एक अन्य पत्रिका में एकलव्य की रिपोर्ट की समीक्षा पढ़ी, जिसमें होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम के बंद होने पर टिप्पणियां थीं। लेकिन आपकी ओर से इस रिपोर्ट का कोई ज़िक्र नहीं हुआ है। मुझ जैसे संदर्भ के अन्य पाठकों की भी इन सवालों में रुचि होगी। वे इस रिपोर्ट को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? कृपया यह भी बताइए कि हम संदर्भ एवं एकलव्य को अपना सहयोग किस-किस तरह दे सकते हैं।

कमलेश उप्रेती
नारायण नगर, पिथौरागढ़, उत्तराखंड

संदर्भ के अंक 51 में मेरा लेख वर्षा का चक्र प्रकाशित किया, इसके लिए धन्यवाद। मेरे परिचय में मेरी पहचान सिर्फ शिक्षिका के रूप में बताई गई है। मैं इस संबंध में कुछ कहना चाहती हूं।

मैं और मेरे गांव के कुछ साथी एकलव्य के बाल-समूह कार्यक्रम से लंबे समय से जुड़े हुए हैं। हमारे ही एक साथी ने गांव में स्कूल शुरू किया जिसमें मैं भी पढ़ाती थी। इस स्कूल में हमने अन्य स्कूलों से हटकर रचनात्मकता को बढ़ाना, मौलिक अभिव्यक्ति और सहज एवं खेल-खेल में शिक्षा आदि उद्देश्य तय किए थे। मैं सोचती हूं कि शिक्षण-कार्य और बच्चों के बीच काम करने की मेरी रुचि को विकसित करने में बाल-समूह की अहम भूमिका रही है।

मुझे ऐसा लगता है कि इतने लंबे समय से बाल-समूह कार्यक्रम से जुड़े होने के कारण मेरी पहचान बाल-समूह के अंतर्गत की जाती तो बाल-समूह कार्यक्रम की भूमिका भी सामने आती, और साथ ही हमारे अन्य साथियों को भी अच्छा लगता।

नीतू मालवीय
हिरणखेड़ा, ज़िला होशंगाबाद

कमलेश उप्रेती के पत्र के संदर्भ में ....

एकलव्य के होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम व सामाजिक अध्ययन शिक्षण कार्यक्रम को मध्यप्रदेश शासन ने छह-सात महीने तक चले एक लंबे वाद-विवाद के बाद अगस्त 2002 में बंद कर दिया था, जिस पर देश भर में तीखी प्रतिक्रिया हुई थी। सन् 2001 से 2004 तक की एकलव्य की तीन सालाना रिपोर्ट में इस घटनाक्रम और उसमें से उभरते मुद्दों व लोगों की प्रतिक्रियाओं का विस्तृत दस्तावेज़ीकरण किया गया है। अगर इसे पढ़ने में आपकी रुचि है तो हमें खत लिखें, हम तुरंत आपको यह रपट भिजवा देंगे। लगभग 250 पेज की इस रपट की सहयोग राशि पचास रुपए है, अगर आप इसे भेज सकें तो अच्छा होगा। रपट बिना सहयोग राशि के भी उपलब्ध है।

- संपादक मंडल

शैक्षणिक संदर्भ सही समय पर भेजने के लिए धन्यवाद। लगातार कई सालों से हम इसके पाठक हैं और हर प्रकार की विषय-वस्तु का लाभ उठा रहे हैं। अपने कार्यक्षेत्र यानी विद्यालयों में अपनी समझ बढ़ाने तथा विषयों को सही ढंग से प्रस्तुत करने में इस पत्रिका ने हमारा मार्गदर्शन किया है। समस्त सम्पादक मंडल व सहयोगी जो लगातार इसमें लिखते रहते हैं वे प्रशंसा के पात्र हैं।

हाल ही में अंक 3(51) मिला जो अत्यंत प्रभावशाली सिद्ध हुआ। मैं रोहतक के एक गांव किलोई में पढ़ाती हूं। वहां ज़िले में सर्वशिक्षा अभियान के तहत कार्यशाला चल रही थी, जिसमें अलग-अलग विषयों को पढ़ाने वाले शिक्षकों के अलावा प्राइमरी शिक्षक भी साथ बैठे थे। शिक्षकों का यह समूह सिवाय निराशापूर्ण बातों के कुछ भी सुनने के मूड में नहीं था। उसी भीड़ में मैं हाथ में संदर्भ लिए पहुंची और 'कहानी सुनाकर तो देखो' का सीधा व सरल प्रयोग उनके बीच करके देखा। तुरंत ही रोचक नतीजे सामने आए। सभी शान्त होकर सोचने लगे "स्त्रियों को सबसे ज़्यादा क्या पसंद है?"

इस तरह वे सब शिक्षक व शिक्षिकाएं कहानी में शामिल हो गए, बहस चली और कहानी कक्षा में हर स्तर पर किस प्रकार एक महत्वपूर्ण औज़ार हो सकती है इसका सफल प्रयोग सबकी समझ में आ गया। और तुरन्त दो अध्यापिकाओं ने संदर्भ की सदस्यता हेतु पैसे निकालकर मुझे पकड़ा दिए जो मैं आपके पास भेज रही हूं।

मुझे तो संदर्भ पत्रिका बहुत मददगार सिद्ध हुई है। यह सदैव हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण व उपयोगी स्रोत के रूप में काम आती है।

मैंने बच्चों को पढ़ाते हुए कुछ प्रयास किए हैं जिनके बारे में मैं जल्द ही लिखकर भेजने की कोशिश करूंगी।

गीता
जसवीर कॉलोनी, रोहतक, हरियाणा

भूल सुधार

अंक 51 में लेखक परिचय में हमसे कुछ गलतियां हो गई थीं। लेख 'फोटो इलेक्ट्रिक इफेक्ट यानी प्रकाश विद्युत प्रभाव' का अंग्रेज़ी से हिन्दी अनुवाद रुस्तम सिंह ने किया है। उनका परिचय ज़रूर दिया गया था परन्तु अनुवाद उन्होंने किया है यह लिखना छूट गया।

इसी तरह 'वर्षा का चक्र' की लेखिका के परिचय के बारे में पूर्ण परिचय इस स्तंभ में छपे उनके पत्र में दिया गया है।